गुरुस्थान

आज के वर्तमान समय मे यह अनुभव हो रहा है, की "एक स्थान" ऐसा हो जहाँ पर गुरुशक्तीयो आंमन्त्रीत किया जाये। ऐसा एक भी स्थान हमारे पास नही है, "समर्पण ध्यान" को दस साल समाज मे आकर हो गये लाखो साधक संख्या है, सारे विश्वभर मे इतने सेंन्टर बने हुये है, लेकीन हमारे पास एक अपना स्थाई स्थान नही है, जहाँ "गुरुपोर्णिमा उत्सव" मनाया जा सके। हम पिछले दस सालो से सदैव कभी किसी हॉल मे कभी कीसी स्टेडीयम मे कभी कीसी के जमीन पर यह उत्सव मनाते जा रहे है, और हम हमारी उर्जा नष्ट कर रहे है, क्योकी आप भी अनुभव करेगे की गुरुपोर्णिमा जैसा उत्सव चैतन्य की दृष्टी से दुसरा नही है।

मै स्वंयम भी अनुभव करता हु, की मै तो उस दिन सामान्य ही रहता हु, पर उस दिन सारे "गुरु" उपस्थीत होते है, मै उन्हे आंमन्त्रीत करता हु, वे आते है, चैतन्य छुराते है, और चले जाते है। और साधक भी उस दिन चैतन्य ग्रहण करने की चरमसीमा मे होते है, याने "गुरुपोर्णिमा उत्सव" वह उत्सव है, जहाँ चैतन्य की गंगा अवतरीत होती है, वह स्थान भी पवीत्रतम हो जाता है, लेकीन उसी स्थान पर हम बाद मे कभी जमा नही होते है, और न उस स्थान पर बाद मे कभी गुरुपोर्णिमा मनाते है। क्योकी वह स्थान कीसी दुसरे का होता है और अगले साल कोई नया स्थान चुनते है। याने कहते है, की "दिन भर चले अढाई" कोस" वैसी स्थिती है, और जब अपना एक गुरुस्थान निर्माण नही होता ऐसी ही स्थिती रहेगी

समर्पण ध्यान के सामुहिक शक्ती के दस वर्ष हो गये है।
हम एक स्थान अभी तक नही बना पाये है, जहाँ
गुरुशक्तीया स्थाई रूप से स्थापीत हो और वह
"गुरुस्थान से आने वाली पिढ़ीया भी आध्यात्मीक
मार्गदर्शन प्राप्त करे,
और रही बात "दांडी आश्रम" की तो यह वह स्थान
है। जो "आगामी वर्षो मे समुद्र मे डूबने वाला है,"
तो वह अगले आठ सौ सालो तक स्थाई कैसे
रह सकता है, इसलीये अब सभी साधको जागने की
आवश्यकता है। और कोई बाहर से आकर तुम्हारे
लिये करेगा यह बात भुल जाओ जब तक तुमलोग
स्वयम नही करते यह कभी नही होगा, प्रत्येक
साधक सोचता है, दुसरा साधक करेगा कोई दुसरा
नही है, तुझे ही स्वयम करना है, और यह
मै तुझे ही कह रहा हुँ, क्या तु सारे चैतन्य का
आनंद अपने ही जिवन मे लेगा आने वाली पीढ़ी
के लिये कोई व्यवस्था नही करेगा, अभी जो है
सब अस्थाई है, "गुरु स्थान" स्थाई बनाने की
आवश्यकता है, भवीष्य जो दिख रहा है, वह
बताना मेरा कर्तव्य था, आगे की आप ही सोचो
आप केवल जमीन की व्यवस्था करो आगे का
भवन निर्माण स्वयंम गुरुशक्तीया ही कर लेगी,
यह मेरा "बाबा धाम" का अनुभव है, आप भी
यह अनुभव लेकर देखो परमात्मा आप सभी को
सुबुद्धी दे। बस और क्या आप सभी को
खुब खुब आर्शीवाद ---

आपका
बाबास्वामी
16/10/10